

अमीनो एसिड से बनी चैन लूप या प्रोटीन एक कंडक्टिंग लूप के समान व्यावहार करती है इस लूप में मैग्नेटिक फ्लक्स के कारण करंट बनेगा और करंट के फलों होने से मैग्नेटिक फील्ड बनेगा। इस करंट और मैग्नेटिक फील्ड की सहायता से बायोमॉलीक्यूलस महाजीनों में बदल जाते है। फिजिक्स के अनुसार ऐसा सम्भव है और बायोमॉलीक्यूलों को बर्फ के बीच में पैक कर पोलर ओरबिट में भेज कर प्रयोग किया जा सकता है, ताकि इसका सत्यापन हो सके।

(4) पर्यावरणीय प्रतिक्रिया :- जीवन पर्यावरण से प्रतिक्रिया करने की सुक्ष्म और सक्रिय व्यवस्था है। जीवन के सभी स्वरूप पर्यावरण के प्रति संवेदनशील हैं। जीवन प्रत्येक पर्यावरणीय उद्दीपन से प्रतिक्रिया करता है। पर्यावरण से यह प्रतिक्रिया कोई भी जीव उसमें स्थित जीन डीएनए के माध्यम से प्रोटीन और डीएनए की प्रतिक्रिया बनाकर करता है।

कोई भी जीन पर्यावरण से प्रतिक्रिया तभी कर सकता है जब वह किसी दूसरे पर्यावरण में बना हो, तभी पृथ्वी का पर्यावरण उसे नष्ट करने का प्रयास करेगा। इसलिए हम यह वैज्ञानिक आधार पर निर्धारित करते हैं कि जीन पोलर ओरबिट में बने हैं और इसीलिए जीन पृथ्वी सतह के पर्यावरण से प्रतिक्रिया करते हैं। जीनों की इस पर्यावरण से प्रतिक्रिया ही जीवन के विकास का प्रधान कारण है। यह अवधारणा जीवन की उपस्थिति से स्वतः प्रमाणित है।

(5) जेनेटिक पूल अवधारणा :- कुछ वैज्ञानिकों ने शुरुआती कोशिका बनने के लिए जेनेटिक पूल अवधारणा प्रस्तुत की। इसके अनुसार शुरुआती पृथ्वी पर प्राकृतिक रूप से प्रेरित हुई अज्ञात प्रक्रियाओं द्वारा एक जेनेटिक पूल बना। इसमें सभी प्राणी और पादप प्रजातियों के जीन थे। पर्यावरण की प्रतिक्रिया स्वरूप इस जेनेटिक पूल में कुछ जीनों का समूह सक्रिय हुआ और इनकी प्रतिकृति हुई। प्रतिकृति जीन विशिष्ट और अद्वितीय स्वरूप में परस्पर संयोजित होकर प्रोकेरियोट कोशिकीय डीएनए में बदले। फिर दूसरी बार दूसरी पर्यावरणीय प्रतिक्रिया स्वरूप पूर्व में सक्रिय हुए जीनों में से कुछ जीन हट कर, कुछ नए मिलकर, कुछ बदलकर उनकी प्रतिकृति होती है। फिर वे पुनः संयोजित होकर नए अद्वितीय कोशिकीय डीएनए में बदल जाते हैं। इस तरीके से बनी प्रत्येक नई उर्वर कोशिका पूर्व की तुलना में अधिक उन्नत होती है और उसमें पूर्व स्थित कोशिका के कुछ जीन अनिवार्य रूप से होते हैं। इस जेनेटिक पूल से सभी प्राणी और पादप प्रजातियों का

शुरुआती कोशिकीय डीएनए बना। उच्च प्राणी और पादप प्रजातियों का कोशिकीय डीएनए युगल के रूप में बना। प्रत्येक कोशिकीय युगल एक भ्रूण युगल अवस्था से गुजरते हुए युवा प्राणी युगल में विकसित हुआ। प्रत्येक युवा प्राणी युगल यौन समागम से जनसंख्या बढ़ाते हुए एक प्राणी प्रजाति की स्थापना करता है फिर इनके जीनों में कोई उदविकासीय बदलाव नहीं होते।

यद्यपि कही गई जेनेटिक पूल अवधारणा उदविकास को खारिज करती है, परन्तु जेनेटिक पूल के बनने के स्रोत को नहीं बता पाती है। जेनेटिक पूल के बनने के समर्थन में कोई भी डायरक्ट और अनडायरक्ट एविडेंस नहीं मिले। इसलिए इसे खारिज कर दिया गया।

जेनेटिक पूल अवधारणा असामान्य विश्व परिकल्पना का समर्थन करता है। इससे हम यह निर्धारित करते हैं कि प्रत्येक प्राणी प्रजाति का शुरुआती कोशिकीय डीएनए केवल असामान्य विश्व परिकल्पना के अनुसार ही बन सकता है। प्रयोगों के द्वारा वैज्ञानिक नया जेनेटिक पूल बना सकते हैं।

(6) जेनेटिक्स :- जेनेटिक्स के अनुसार किसी भी प्राणी और पादप प्रजाति के जीनों में पीढ़ी दर पीढ़ी उदविकासीय बदलाव नहीं होते, परन्तु फिर भी प्रत्येक उच्च प्राणी प्रजाति में निम्न प्राणी प्रजाति के जीन मौजूद होते हैं। पर्यावरणीय अनुकूलन हेतु हुए बदलाव जंक डीएनए के बदलाव हैं जिनके द्वारा कुछ जीन कम या अधिक प्रभावी हो जाते हैं। एक प्राणी या पादप प्रजाति के सभी सदस्य का जीन डीएनए समान होता है, परन्तु जंक डीएनए किसी का भी समान नहीं होता। जेनेटिक इंजीनियरिंग के द्वारा किसी भी जीन को किसी प्राणी या पादप या बैक्टीरिया में प्रविष्ट कराके उसे अभिव्यक्त किया जा सकता है। इससे साबित है कि जीन डीएनए में बदलाव सम्भव नहीं है, जीन अमर हैं, जीन स्टेबल है, प्रत्येक जीन एक इकाई है और ये दूसरी प्राणी प्रजाति या पादप प्रजाति में जाने पर भी नहीं बदलते और वहां भी समान प्रोटीन संश्लेषित करते हैं। वैज्ञानिक लैब में असंख्य प्रकार के प्रयोगों के द्वारा पृथ्वी की शुरुआती पर्यावरणीय कंडीशनस को रिप्लिकेट करके भी बायोमॉलीक्यूलों से कोई कोशिकीय डीएनए नहीं बना सके हैं। फिर पृथ्वी पर जीवन कैसे आया ?

असामान्य विश्व परिकल्पना में प्रस्तुत प्रक्रियाओं द्वारा वैज्ञानिक प्रायोगिक तौर से पृथ्वी पर नया जीवन बना कर जीवन के सभी रहस्यों को खोल देंगे।

(7) मैग्नेटिक फ्लक्स :- पृथ्वी के अक्षीय घूर्णन से निरन्तर चेंज होने वाले मैग्नेटिक फ्लक्स से पृथ्वी के चारों तरफ फैले अन्तरिक्ष में मौजूद मैग्नेटिक फील्ड में स्थित किसी भी कंडक्टर में विद्युतचुम्बकीय ऊर्जा इनड्युज्ड होती है। इस इलेक्ट्रोमैग्नेटिक इनडक्शन ऊर्जा के आधार पर यह स्वतः ही परिकल्पित होता है कि एक ज्वालामुखी झील में रासायनिक तरीके से संश्लेषित बायोमॉलीक्यूलस अन्तरिक्ष में जाकर वहां मौजूद इनड्युज्ड इलेक्ट्रोमैग्नेटिज्म की सहायता से जीन डीएनए में बदल सकते हैं!

(8) प्रस्तावित प्रधान प्रयोग :- इस परिकल्पना को साबित करने के लिए सभी प्रकार के बायोमॉलीक्यूलस को लगभग -200 डिग्री सें. तक ठण्डा करके बनाए गए 100 मीटर की परिधि युक्त एक प्रायोगिक हिमखण्ड के केन्द्र पर कैद करके पोलर लोअर अर्थ ओरबिट में स्थापित करना होगा। इस हिमखण्ड की रचना किसी काल्डेरा वालकैनिक क्रैटर लेक के पानी के समान पानी से होनी चाहिए।

प्रायोगिक हिमखण्ड की प्रत्येक 84 मिनट की एक परिक्रमा में एक महाजीन जोड़ा बनेगा। इससे कुछ सालों में ही लाखों की संख्या में महाजीन बन जाएंगे। इसके बाद हिमखण्ड को समुद्री पानी में उतारना होगा। हिमखण्ड के द्रवित होने पर महाजीन उसी प्रकार कोशिकीय डीएनए बनाकर शुरुआती कोशिका बनाएंगे जैसे कि उपस्थित प्राणी प्रजातियों का कोशिकीय डीएनए बना था। इस क्रिया से हजारों प्रकार की शुरुआती उर्वर कोशिकाएँ बनेंगी। प्रत्येक शुरुआती उर्वर कोशिका युगल से एक अद्वितीय प्राणी प्रजाति का उदभव होगा।

इस प्रयोग से मानव जान सकेगा कि पृथ्वी पर जीवन कैसे शुरू हुआ। यह प्रयोग वर्तमान में उपलब्ध अन्तरिक्षीय प्रयोगिकी की सहायता से आसानी से किया जा सकता है। इस प्रयोग के बाद मानव की जीवन के प्रति समझ पूरी हो जाएगी। ऐलन मस्क जैसे नवाचारी वैज्ञानिक, ईसरो और नासा यह प्रयोग करेंगे। इस प्रयोग के साथ ही डार्विन की उदविकासीय अवधारणा और प्रजातिय उदविकास अवधारणा और ओपेरिन की रासायनिक उदविकास की अवधारणा अपने आप ही खारिज हो जाएगी।

अन्य प्रयोग :- वैज्ञानिक केवल अमीनो एसिड को बर्फ के बीच कैद कर अन्तरिक्ष में भेज कर विभिन्न प्रकार के विशिष्ट एजाइम या प्रोटीन प्राप्त कर सकते हैं, मोनोसेकेराइड से विभिन्न प्रकार के जटिल पॉलीसेकेराइडस प्राप्त कर सकते हैं

और न्युक्लियोटाइडों से विशिष्ट प्रकार के जीन डीएनए प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार बने जीन डीएनए को बायोटेक्नोलोजी की सहायता से किसी प्राणी में भी प्रवेश करवा सकते हैं और उसके जीनों में मनोवाछित बदलाव कर मनोवाछित शारीरिक बदलाव कर सकते हैं। इससे घातक रोगों से सुरक्षा, लम्बा परन्तु स्वस्थ जीवन, और पर्यावरण मित्र टैक्नोलोजी का विकास सम्भव है। इस प्रकार अन्तरिक्ष में संश्लेषित एंजाइमैटिक प्रोटीन, पोलिसैकेराइडस और डीएनए-आरएनए बहुत विशिष्ट होंगे जो मानव स्वास्थ्य में क्रान्तिकारी बदलाव करने में सक्षम होंगे। बीज और अन्य जैव पदार्थों को अन्तरिक्ष में भेज कर चीन द्वारा किए जा रहे प्रयोग इसका समर्थन करते हैं कि अन्तरिक्ष में डीएनए को प्रभावित करने की क्षमता है।

(9) **डायनासौर की उत्पत्ति :-** जीवाश्मों से पता चलता है कि वर्तमान में उपस्थित प्राणी प्रजातियों से पहले पृथ्वी पर डायनासौर जैसे विशाल प्राणियों का पृथ्वी पर राज रहा है। हम यह परिकल्पित करते हैं कि पृथ्वी से दो या अधिक कालडेरा ज्वालामुखी झीलों में बायोमॉलीक्यूल बने। दोनों ही झीले हिमयुगीन ठण्ड से जम कर दो हिमखण्डों में बदल गईं और अलग अलग समय में इन दोनों ज्वालामुखियों में भीषण विस्फोट हुए। इससे ये दोनों हिमखण्ड अन्तरिक्ष में प्रक्षेपित हुए। इनके केन्द्र पर पैक होकर बायोमॉलीक्यूल अन्तरिक्ष में पहुंचे। दोनों ही हिमखण्ड पोलर ओरबिट में स्थापित हुए। परन्तु इन दोनों की ऊंचाई अलग अलग थी। समान प्रक्रिया से गुजर कर दोनों के केन्द्र में महाजीन बने। अधिक ऊंचाई वाले हिमखण्ड की गति पहले कम हुई और वह लगभग 65 करोड़ साल पहले समुद्र में गिरा। इससे एक महाकोशिकीय प्राणी विकसित हुआ। इस महाकोशिकीय प्राणी ने लगभग 55 करोड़ साल पहले सरल शुरुआती प्राणी और पादप प्रजातियों को जन्म देना शुरु किया। लगभग 35 करोड़ साल पहले तक महाकोशिकीय प्राणी पूर्ण विकसित होकर ने बड़े आकार की प्राणी और पादप प्रजातियां को जन्म देना शुरु किया। इससे डायनासौर प्रजातियां पृथ्वी पर फैल गईं।

लगभग 10 करोड़ साल पहले दूसरा हिमखण्ड समुद्र में गिरता है। इसके गिरने से पृथ्वी पर सूनामी और भुकम्प आता है और इससे पृथ्वी पर व्यापक उथल पुथल होती है। इससे डायनासौर प्रजाति नष्ट हो जाती है। फिर धीरे धीरे पृथ्वी का वातावरण शान्त हो जाता है। दूसरा हिमखण्ड समुद्र में द्रवित होता है और पर्यावरण से प्रतिक्रिया करते हुए हिमखण्ड के केन्द्र में स्थित महाजीनों से आदिकोशिकाएं बन

कर एक नया महाकोशिकीय प्राणी विकसित होता है। नया महाकोशिकीय प्राणी पूरी तरह नई प्राणी और पादप प्रजातियों को जन्म देना शुरू करता है। यह भी प्रोकेरियोटस और फिर यूकेरियोटस जैसी प्राणी प्रजातियों को जन्म देकर विकसित होता है। विकसित महाकोशिकीय प्राणी नई स्तनपाई, सरीसृप और पक्षी प्रजातियों सहित नई प्राणी और पादप प्रजातियों को जन्म देकर पृथ्वी पर स्थापित करता है। इनका आकार छोटा होता है और इनका डीएनए अलग होता है।

दोनों महाकोशिकीय प्राणी समान प्रक्रिया से बने। आधुनिक विज्ञान अब तक डायनासौरों का उद्गम और उनके खात्मों की वैज्ञानिक व्याख्या नहीं कर सका है। असामान्य विश्व परिकल्पना के अनुसार महाकोशिकीय प्रक्रिया पृथ्वी पर दो बार हुई। पहले डायनासौर प्रजातियां बनी, फिर उनका सामुहिक खात्मा हुआ और फिर वर्तमान प्राणी प्रजातियां बनीं। डायनासौर प्रजातियां अपने महाकोशिकीय प्राणी के सुपर ब्रेन से नियंत्रित हुई और वर्तमान प्राणी प्रजातियां दूसरे महाकोशिकीय प्राणी के सुपर ब्रेन से। इसलिए पृथ्वी पर दो भगवान हुए और दोनों के सुपरब्रेन से इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव मुक्त हुई जो आज भी पृथ्वी के एनवायरमेंट में कैद है। डायनासौर प्रजातियों के सामुहिक खात्मे बाद डायनासौर सुपरब्रेन से बनी इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव अब किसी को भी निर्देशित और नियंत्रित नहीं कर पाती है क्योंकि इसके द्वारा नियंत्रित प्राणी डीएनए अब जीवित नहीं है। परन्तु दूसरे महाकोशिकीय प्राणी के अन्त में मानव जैसी उच्च प्राणी प्रजाति पृथ्वी पर स्थापित होती है। महाकोशिकीय प्राणी के विघटन के साथ ही सुपर ब्रेन में निहित प्राणियों के डीएनए से जुड़ी सभी सूचनाएं इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव में बदल कर पृथ्वी के वातावरण में हमेशा के लिए कैद होकर इसके द्वारा स्थापित प्राणी और पादप प्रजातियों को नियंत्रण और निर्देशित कर रही है। भविष्य में महाकोशिकीय इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव को भी वैज्ञानिक उपकरण पकड़ पाने में सफल होंगे, तभी मानव भगवान को भी समझ पाएगा जो प्रत्येक प्राणी के अन्दर इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव के रूप में सक्रिय है!

(10) हिमखण्ड द्वारा गुरुत्व अर्जित करना :- जैसे ही हिमखण्ड 800 किलोमीटर से ऊपर जाता है जैसे ही पृथ्वी का गुरुत्व समाप्त हो जाता है। जैसे ही हिमखण्ड 1200 किलोमीटर तक पहुंचता है वह अन्तरिक्ष को कर्ब करता है। यह कर्बड अन्तरिक्ष इस पिण्ड में गुरुत्व का स जन कर देगा। असामान्य विश्व परिकल्पित अवधारणा के अनुसार हिमखण्ड अन्तरिक्ष में जाकर अपने रेडियोएक्टिव

रेडियशन से स्पेस को बाहर की तरफ कर्ब करके अस्थाई ग्रेविटि बबल बनाएगा, इस ग्रेविटि बबल से हिमखण्ड में गुरुत्व का सृजन होगा और हिमखण्ड ग्रेविटि बबल के केन्द्र पर रहकर पृथ्वी के ग्रेविटि बबल के केन्द्र की परिक्रमा करेगा।

इस समझ के आधार पर हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हिमखण्ड जैसे ही पृथ्वी के गुरुत्व की सीमा 800 किलोमीटर से ऊपर जाता है हिमखण्ड अपना गुरुत्व अर्जित कर लेगा और गुरुत्व से इसका केन्द्र द्रवित हो जाएगा, जबकि केन्द्र के ऊपर स्थित शेष हिमखण्ड का ताप नहीं बढ़ेगा, जैसे कि पृथ्वी की कोर का ताप उसकी क्रस्ट की तुलना में बहुत ज्यादा है।

(11) सेल मैम्बरेन द्वारा अन्तरिक्षीय पल्स विकिरण का एम्पलीफिकेशन:— हम यह परिकल्पित करते हैं कि प्राणियों और पादपों की सेल मैम्बरेन पृथ्वी की सतह पर आने वाले सुक्ष्म अन्तरिक्षीय इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रेडियशन और पल्स को एम्पलीफाई करके उसे कोशिका केन्द्रक में फोकस करती है। फिर न्युक्लियस की मैम्बरेन भी इसे पुनः एम्पलीफाई करके अन्दर स्थित डीएनए पर पुनः फोकस करती है। इससे डीएनए, प्रोटीन, लिपिड्स, और सैकेराइड के अणु सक्रिय होकर नियंत्रित रासायनिक क्रियाएं करते हैं।

वैज्ञानिक इसका सुक्ष्म अध्ययन और परिक्षण करके सैल मैम्बरेन की ऐसी प्रोपर्टीज को साबित करेंगे कि सेल मैम्बरेन सुक्ष्म इलेक्ट्रोमैग्नेटिक पल्स रेडियशन को एम्पलीफाई करके सेल न्युक्लियस के अन्दर स्थित डीएनए पर फोकस करती है और इसकी सहायता से सुक्ष्म रासायनिक क्रियाएं होकर कोशिकीय कार्य सम्पन्न होते हैं। इससे जीवन चलता है।

निष्कर्ष :- इस तरीके से ही एक एक करके अरंख्य प्राणी और पादप प्रजातियों के जन्म के लिए शुरुआती कोशिकीय डीएनए बन कर कोशिकीय स्वरूप ग्रहण कर सकता है। एक ही महाजीन पूल से अरबों-खरबों बैक्टीरिया, पादप और प्राणी प्रजातियों का पृथ्वी पर जन्म, पल्लवन और नियंत्रण सम्भव हो सकता है। अन्य सभी सम्भावनाओं का वैज्ञानिकों ने परीक्षण कर लिया है परन्तु इनसे जीवन का सृजन नहीं हो पाया है। असामान्य विश्व से मिलती-जुलती कोई परिकल्पना अब तक नहीं बन पाई है, इसलिए इस अद्वितीय परिकल्पना को हम अन्तिम निष्कर्ष मान कर प्रयोग और परीक्षण के लिए प्रस्तुत करते हैं।

मैने असामान्य विश्व परिकल्पना अपनी सीमित बुद्धि, ज्ञान और संसाधनों के सहारे विकसित की है। विज्ञान जगत प्रयोग, परीक्षण, निरीक्षण, शोध और अनुसंधान के द्वारा नई परिकल्पना बनाकर, कुछ जोड़कर, कुछ संशोधित करके, कुछ हटाकर और कुछ स्थापन्न करके इसे पूर्ण वैज्ञानिक स्वरूप में बदल देगा। फिर इस असामान्य विश्व परिकल्पना को प्रयोग, शोध और अनुसंधान द्वारा सिद्धान्त में बदला जाएगा। इससे विश्व के सामने नया विज्ञान प्रस्तुत होगा जो वर्तमान में स्थापित आधुनिक विज्ञान को नया आयाम प्रदान करेगा। साथ ही वैदिक विज्ञान के कुछ अंश को वैज्ञानिक तरीके से विश्व के सामने प्रस्तुत करेगा। इससे विश्व के कल्याण के लिए वैदिक विज्ञान का भी उपयोग वैज्ञानिक तरीके से किया जा सकेगा और इससे वैदिक विज्ञान को वैश्विक स्वीकार्यता प्राप्त होगी, तब भारत फिर से विश्वगुरु होगा।

असामान्य विश्व के विभिन्न कार्यक्रमों तथा घटनाओं को मिडीया द्वारा दिया गया प्रमुख कवरेज :-

'असामान्य विश्व' की एक खोज

दैनिक भास्कर जयपुर 3.4.2012 सिटी भास्कर। कहते हैं अगर कोई काम शिददत से किया जाए, तो पूरी कायनात साथ देने लगती है। कुछ ऐसा ही हुआ भास्कर सेक्टर 3 के तिलक नगर निवासी सुरेश कुमार के साथ। हाल ही इन्होंने असामान्य विश्व नामक किताब लिखी है, जिसे मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने सराहा है। किताब की खासियत है कि इसमें सर्न प्रयोगशाला में जारी प्रयोगों में ऊर्जा कणों की अति उच्च गति पर महाटक्कर करवाकर क्वार्क ग्लुआन प्लाज्मा उत्पन्न कर पदार्थ उत्पन्न करने के सिद्धान्त को खारिज कर शक्तिशाली गतिशील विद्युत् चुंबकीय कक्षा में तरंग ऊर्जा से क्वार्क ग्लुआन प्लाज्मा की उत्पत्ति की अवधारणा को स्थापित किया गया है। सुरेश कहते हैं कि राजस्थान विश्वविद्यालय के प्राणी शास्त्र विभाग के मार्गदर्शन में विज्ञान समुदाय इस महत्वपूर्ण शोध तथा अनुसंधान परियोजना पर विस्तृत कार्य करने जा रहा है।

पंजाब केसरी दिनांक 3 फरवरी 2013

असामान्य विश्व का विमोचन

सीखते रहने के लिए शिष्य ही बने रहो-नन्द भारद्वाज

जयपुर : (कासं) हरिश्चन्द्र माथुर राजकीय लोक प्रशिक्षण संस्थान के तत्वाधान में आयोजित पुस्तक मेले में सृजन काव्य गोष्ठी में सुरेश कुमार द्वारा लिखित पुस्तक 'असामान्य विश्व' के 13वें संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण- दिसम्बर 2012 का विमोचन प्रख्यात कवि लोकेश कुमार साहिल ने किया। इस अवसर पर लेखक सुरेश कुमार तथा उनके शोध सहयोगी अजय माटा को सहिल ने दिली मुबारकबाद दी। संगोष्ठी में काव्य लोक के अध्यक्ष श्री नन्द लाल सचदेवा, मुअज्जम अजी तथा रवि भाटिया के साथ गणमान्य लोग उपस्थित थे। मेले के संयोजक किशोर पारीक ने कहा कि असामान्य विश्व पुस्तक अन्तराष्ट्रीय स्तर की है और लेखक राजधानी के विभिन्न विद्वानों के सहयोग से नई अवधारणाओं का विकास कर रहे हैं। पुस्तक मेले में लेखक सुरेश कुमार ने साहित्यकार नन्द भारद्वाज को 'असामान्य विश्व' की प्रति भेंट की। नन्द भारद्वाज ने लेखक सुरेश कुमार को सीखते रहने के लिए शिष्य ही बने रहने की सलाह दी।

दैनिक भास्कर जयपुर 4 फरवरी 2013

असामान्य विश्व का विमोचन

जयपुर। हरिश्चन्द्र माथुर लोक प्रशासन प्रशिक्षण संस्थान में आयोजित पुस्तक मेले में सृजन काव्य गोष्ठी में सुरेश कुमार की कृति 'असामान्य विश्व' के 13वें संस्करण का विमोचन किया। कवि लोकेश कुमार साहिल ने इसका विमोचन किया। इस मौके पर काव्यलोक के अध्यक्ष नन्दलाल सचदेवा, मुअज्जम अली व रवि भाटिया सहित अन्य लोग मौजूद थे।

समाचार जगत जयपुर दिनांक 17.3.2013

पुस्तक दर्पण: डा. सुशमा शर्मा

13वां संयुक्त परिवर्धित एवं संशोधित संस्करण 2012 एक पाठक की दृष्टि में

सुरेश कुमार ने इस पुस्तक में जिन चार अध्यायों का समावेश किया है वे ज्ञान के सागर की विशालता को दर्शाते हैं। लेखक का यह अथक प्रयास सराहनीय है। पाठकगण प्रकृति को नए प्रकार से समझ सकते हैं। एक प्रकार से समाधान भी होता है कि सृष्टि क्यों है ? कैसे है? कैसे अस्तित्व में आई ? यह संस्करण एक प्रकार से अधिक स्पष्ट है, सटीक ढंग से प्रामाणिकता के साथ नई अवधारणाओं को अभिव्यक्त करने में सक्षम है। अवधारणाएं परिपक्व होने पर उसके समर्थन में वैज्ञानिक तथ्यों और सूचनाओं को भी उद्धृत किया है जिनसे नए संदर्भों का निर्माण होता है। इससे अवधारणाओं में किन्तु परन्तु शब्द अवरोध पैदा नहीं करते।

अध्यायों में पृथ्वी निर्माण, द्रवीकरण, ऊर्जा संचालन और मनुष्य का विकास का विवेचनात्मक अध्ययन है। लेखक की परिकल्पना एक वैज्ञानिक आधार है। यह एक प्रकार से अनुष्ठान है जिसमें लेखक की साधना, विश्वास और जिज्ञासु प्रवृत्ति का दिग्दर्शन है। लेखक की जिज्ञासु प्रवृत्ति विषय का समाधान भी करती है। वैज्ञानिक मान्यताएं सही निष्कर्ष पर पहुंचती हैं। डार्विन के सिद्धांत अवश्य ही गम्भीर है। लेखक ने वैज्ञानिक सिद्धांतों को सरल ढंग से प्रस्तुत करके गूढ़ रहस्यों को तर्कसम्मत शिल्प से मुखरित किया है।

हमारी मान्यता है मनुष्य द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत अस्थायी होते हैं, क्योंकि परिवर्तन ही आविष्कार की जगती है। परिवर्तन होगा तभी विकास होगा। लेखक के व्यापक विचार अवश्य ही ज्ञान की परिधि का स्पंदन करते हैं। इस पुस्तक में समाहित विषय अन्य वैज्ञानिक मान्यताओं का विवरण आधुनिक विज्ञान के उपकरण हैं, जो नए आयामों से हमें रूबरू करवाते हैं। लेखक ने इस बात को भी स्पष्ट कर दिया है कि पदार्थ की उत्पत्ति हेतु महाकक्षीय अवधारणा तथा जीवन की उत्पत्ति हेतु महाकोशिकीय अवधारणा की विस्तृत व्याख्या करना आवश्यक है। क्योंकि सिद्धान्तों के रूप में स्थापित करने के लिए अनेक परीक्षणों को आत्मसात करना होगा। आने वाली पीढ़ी के लिए यह पुस्तक अवश्य ही मार्गदर्शिका के रूप में अवतरित है।

नए सोच के साथ यह पुस्तक एक धरोहर है। प्रस्तुत पुस्तक अंतर्राष्ट्रीय स्तर की है। पुस्तक इस बात का आव्हान करती है 13000 मिलियन वर्ष पूर्व पदार्थ शून्य अन्तरिक्ष में तरंग ऊर्जा के दो बंडल परस्पर एक अत्यंत सघन ऊर्जा महाबिन्दु का निर्माण करते हैं। यह महाबिन्दु क्षणिक होता है। इसके चारों ओर अति विशाल विद्युत्चुम्बकीय कक्षा का निर्माण होता है। पुस्तक के विषय एक चिरंतन सोच के राजमार्ग हैं जहां राजयोग की तलाश हैं, विषय नवनवोन्मेष शामिली दृष्टि से समन्वित होकर रूपायित हो पाठकों को 'इदमेकम' (यह ऐसा है)।

पुस्तक परिचय 'असामान्य विश्व'

राजस्थान पत्रिका, दिनांक 15 अक्टूबर 2000, विज्ञान पर आधारित इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में पृथ्वी का निर्माण कैसे हुआ ? विषय पर चर्चा की गयी है। द्वितीय अध्याय "द्रवीकरण" में यह समझाने का प्रयास किया गया है कि पृथ्वी के भूभाग पर पानी की उपस्थिति को सुनिश्चित करने के लिए वनस्पति व जीवों की उत्पत्ति हुई है। तृतीय अध्याय 'ऊर्जा प्रवाह' से सम्बन्धित है, जिसमें पृथ्वी पर क्रियाशील विभिन्न ऊर्जा रूपों के संचार के तरीकों को समझाया गया है। चतुर्थ अध्याय "मनुष्य का विकास" में यह बताने का प्रयास किया गया है कि मनुष्य एक जानवर से (चौपाये) वर्तमान मनुष्य के रूप में (दुपाए) में किन परिस्थितियों में परिवर्तित हुआ। रंगीन रेखाचित्रों के माध्यम से भलीभाँति समझाने का प्रयास किया गया है।

दैनिक भास्कर जयपुर 24 नवम्बर, 2000

असामान्य विश्व पुस्तक पर संगोष्ठी आज से

जयपुर, 23 नवम्बर (भाससे)। राजस्थान विश्वविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग में 24 नवम्बर व 25 नवम्बर को असामान्य विश्व पुस्तक पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा। पुस्तक लेखक सुरेश कुमार ने बताया कि पुस्तक में मानव उद्विकास, पृथ्वी उद्विकास के तथा भौतिकी के बारे में आधुनिक विज्ञान से पूणतया हटकर बिल्कुल नए दृष्टिकोण से अवधारणाएं प्रायोगिक व तार्किक आधार पर प्रस्तुत की गई है।

समाचार जगत 24 नवम्बर, 2000

सुरेश प्रतिभा सम्मान से सम्मानित

जयपुर (कास)। जयपुर समारोह के अन्तर्गत सुरेश कुमार को प्रतिभा सम्मान से सम्मानित किया गया। सुरेश कुमार को यह सम्मान उनकी पुस्तक असामान्य विश्व के लिए दिया गया है। इन्होंने इस पुस्तक में पृथ्वी निर्माण उद्विकास तथा जीवन उत्पत्ति को अलग तरीके से समझाया गया है। विशेष रूप से मनुष्य के उद्विकास को स्थापित मान्यताओं से हट कर बताया है।

इसमें इन्होंने मनुष्य के चौपाया से दोपाया होने को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्पष्ट किया है। जिसके बारे में चिकित्सा विज्ञान, राजस्थान विश्वविद्यालय के प्राणीशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र विभाग, मालवीय क्षेत्रीय अभियांत्रिकी महाविद्यालय, विधि विज्ञान प्रयोगशाला, कृषि अनुसंधान केन्द्र आदि के पतिष्ठित विभागाध्यक्षों, प्राचार्यों एवं वैज्ञानिकों ने इन नई प्रस्थापना की प्रशंसा की है। इनकी पुस्तक में प्रतिपादित अवधारणाओं पर की प्रशंसा की है। इनकी पुस्तक में प्रतिपादित अवधारणाओं पर राजस्थान विश्व विद्यालये के प्राणी शास्त्र विभाग न 24 व 25 नवम्बर को दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है।

राजस्थान पत्रिका, 29.02.2016

असामान्य विश्व का विमोचन

जयपुर, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर सुरेश कुमार लिखित विज्ञान पुस्तक असामान्य विश्व का विमाचन रविवार को नारायण सिंह सर्किल स्थित पिकसिटि प्रेसक्लब में हुआ। इस मौके पर मुख्य अतिथि आटीआई आईएएडी के प्रधान निदेशक जेआर रिणवा ने कहा कि प्रधान महालेखाकार कार्यलय में काम करते हुए सुरेश कुमार ने विज्ञान के स्थापित क्षेत्रों में नई अवधारणाओं को प्रस्तुत किया है। इस मौके पर कनोडिया कालेज की सहायक प्रो. अनामिका और महर्षि कलानाथ शास्त्री मौजूद थे।

समाचार जगत 29.202016

असामान्य विश्व पुस्तक का विमोचन

जयपुर, कास, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर रविवार को सुरेश कुमार द्वारा लिखित पुस्तक असामान्य विश्व के 16वें संस्करण का विमोचन पिकसिटि प्रेस क्लब में किया गया। इस अवसर पर जेआर रिणवा, महर्षि कलानाथ शास्त्री, प्रो. पीआर सोनी, प्रो. अनामिका, प्रो.सरोजनी, प्रो.रवि पानगडिया सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जे.आर.रिणवा ने कहा कि जिस महान भारतीय वैज्ञानिक सी.वी.रमन के सम्मान में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनया जाता है, उनहोंने सहायक महालेखाकार के पद पर कार्य किया था और फिर वे विज्ञान के कार्य की तरफ प्रवृत्त हुए। मुख्य वक्ता एमएनआईटी जयपुर के प्रो.पी.आर सोनी ने कहा कि असामान्य विश्व पुस्तक में प्रस्तावित अवधारणाएं बहुत वैज्ञानिक है, परन्तु स्थापित वैज्ञानिक सिद्धान्तों के विपरीत हैं। इन्हें साबित करने के लिए विस्तृत वैज्ञानिक शोध व अनुसंधान की जरूरत है। अन्य वक्ताओं ने कहा कि पुस्तक ने वैज्ञानिक गणितीय गणनाओं की सहायता से ब्रह्माण्ड और जीवन की उत्पत्ति पर नए शोध और अनुसंधान कर रास्ता खोला है। गहन वैज्ञानिक चिन्तन एवं अध्ययन और उसमें नए आविष्कारों को समायोजित करने से नए सिद्धान्त बनते हैं। असामान्य विश्व में भी ब्रह्माण्ड और जीवन की उत्पत्ति के बारे में वैज्ञानिक अवधारणाएं बनती और बिगड़ती गईं और सुधरती गईं। इससे धीरे धीरे एक नए वैज्ञानिक सिद्धान्त की रूपरेखा बनी है। कार्यक्रम में मंच संचालक कवि किशोर पारीक ने किया।

दैनिक भास्कर, शुक्रवार, 19 सितम्बर, 2014

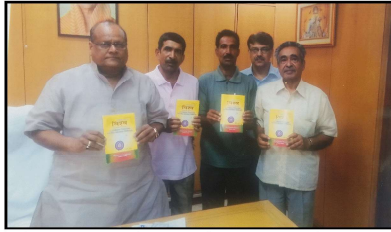
जयपुर, हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत प्रधान महालेखाकार राजस्थान जयपुर के कार्यालय में हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताएं हुईं और विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इस



असामान्य विश्व के लिए सुरेश कुमार सम्मानित

दौरान कार्यालय के वरिष्ठ लेखाकार सुरेश कुमार को हिंदी भाषा में मौलिक लेखन के लिए उनकी पुस्तक असामान्य विश्व के लिए प्रधान महालेखाकार सुदर्शना तला पत्रा ने सम्मानित किया। पुस्तक में पदार्थ और जीवन की उत्पत्ति को नई वैज्ञानिक समझ के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

समाचार जगत, जयपुर, 8 जुलाई, 2014



जयपुर, कासं, । शिक्षा संकुल में सोमवार को सुरेश कुमार की ओर से लिखित पुस्तक असामान्य विश्व के 15वें संस्करण-2014 का लोकार्पण शिक्षा मंत्री कालीचरण सर्राफ ने किया। लेखक के साथ जगदीश चन्द्र, अजय माटा और ग्यारसी लाल मौजूद रहे। पुस्तक में पदार्थ उत्पत्ति और फिर उसके अन्तरिक्षीय पिण्डों में संघनन को नए सिरे से नए साक्ष्यों के साथ और नई व्याख्या के साथ विवेचित किया गया है। शिक्षा मंत्री श्री सर्राफ के अनुसार प्रस्तुत अवधारणाओं पर प्रयोग और परीक्षण कर हमारे वैज्ञानिक इसे एक वैश्विक सिद्धान्त के रूप में स्थापित करेंगे और असामान्य विश्व मॉडल से उपजा सिद्धान्त वैज्ञानिक आधार पर स्थापित होकर हमारी पारम्परिक जीवन उत्पत्ति सम्बंधी मान्यताओं को वैज्ञानिक जामा पहनाकर भारत को पुनः विश्व गुरु बनाएगा और वैज्ञानिक राष्ट्र में बदलेगा। लेखक सुरेश कुमार ने बताया कि असामान्य विश्व मॉडल तरंग ऊर्जा के पदार्थ कणों में बदलने और फिर इन कणों के द्वारा आवेश द्रव्यमान, भार और आयतन अर्जित कर अन्तरिक्षीय पिण्डों में बदलने की स्पष्ट क्रियाविधि विकसित करके पदार्थ की उत्पत्ति और विकास से जुड़े लगभग सभी अनसुलझे सवालों के समाधान प्रस्तुत करते हुए हमारे ब्रह्मांड के सृजन के वैदिक मॉडल की वैज्ञानिकता को साबित करता है।

असामान्य विश्व के पिछले संस्करणों पर प्राप्त प्रमुख प्रतिक्रियाएं :-

महाप्रयोग का पर्याय — 'असामान्य विश्व'

आधुनिक विज्ञान के मूलभूत तथ्यों, तर्कों, नियमों व सिद्धान्तों आदि का तर्कपरक विश्लेषण करते हुए विज्ञान तथा वैज्ञानिक चेतना का विकास करने के उद्देश्य से सृजित पुस्तक 'असामान्य विश्व' एक साधारण पाठक से लेकर प्रबुद्ध पाठक वर्ग की विश्व संबंधी जिज्ञासा को शांत करने का अप्रतिम साधन है। यह पुस्तक चार अध्यायों — 1. पृथ्वी निर्माण ; (The evolution of solar system)] 2. द्रवीकरण ; (The origin and evolution of life) 3. ऊर्जा संचालन ; (The energy flow) 4. मनुष्य का विकास; (The evolution of Man) — के माध्यम से विश्व व प्राणी जीवन को वैज्ञानिक ढंग से समझाने का सफलतम प्रयास है। 'असामान्य विश्व' की यह असामान्य विशेषता ही है कि इसके अब तक प्रकाशित 13 संस्करण विज्ञान के क्षेत्र में प्रतिवर्ष हुए नवीन अद्ययनों, अनुसंधानों, आविष्कारों व नवीन नियमों के प्रतिपादन का परिणाम हैं। पुस्तक का शीर्षक व इसके अध्याय पाठकों को बरबस अपनी ओर आकृष्ट करने में सक्षम हैं।

रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान व भौतिक विज्ञान के नियमों व सिद्धान्तों को आधार बना कर पृथ्वी की उत्पत्ति, विकास व निर्माण की प्रक्रिया संबंधी अवधारणा को अनेक प्रयोगों के आधार पर निर्मित किया जाना, इसकी उपादेयता व विश्वनियता को पोषित करता है। पदार्थ की निर्माण प्रक्रिया तथा पदार्थ में मूल भौतिक गुणों का आरोपण, आकाशगंगाओं का निर्माण, तारों का निर्माण, सूर्य तथा सौर मण्डल का निर्माण आदि के साथ-साथ जैव रसायनों या आनुवांशिक निर्देशों के संश्लेषण संबंधी अवधारणा को अत्यन्त सरल व बोधगम्य रूप से स्पष्ट किया गया है।

3500 मिलियन वर्ष पूर्व हुए महाकोशिका के अवतरण से लेकर 1 लाख वर्ष पूर्व पूर्ण विकसित महाकोशिकीय प्राणी और अन्तिम आनुवांशिक निर्देशों के रूप में होमोसेपियन या आधुनिक मानव के जन्म व विकास में पर्यावरणीय उद्दीपनों की प्रतिक्रिया संबंधी भूमिका को सचित्र व तर्क संगत रूप से विवेचित किया गया है। मानव उत्पत्ति से संबंधित गूढतम विषयों को बड़ी सरलता से पाठकों के समक्ष परोसा गया है। पुस्तक के लेखक का कला स्नातक होने के साथ-साथ वैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि का धनी होना नवीन वैज्ञानिक अवधारणाओं के विकास में साधक सिद्ध हुआ है।

असामान्य विश्व का हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में एक साथ प्रकाशन का महाप्रयोग भी इसकी असामान्यता अर्थात् विशिष्टता का सूचक है। निःसन्देह इस पुस्तक को बोधगम्य बनाने की दृष्टि से विभिन्न सफल एवं सार्थक प्रयोग किये गये हैं। पुस्तक के 14वें संस्करण का प्रकाशन इसकी लोकप्रियता, उपयोगिता एवं विशिष्टता का ही परिचायक है। यह पुस्तक निश्चित रूप से विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों व अनुसंधानकर्ताओं के लिए विश्व की उत्पत्ति संबंधी अवधारणाओं विकसित करने में काफी सहायक सिद्ध होगी। लेखक को इस महाप्रयोग हेतु हृदय से धन्यवाद व बधाई। — प्रो० चन्द्रमौलि सिंह

लोक प्रशासन विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर



Asamanya Vishwa

There is need for a new Einstein of Physics who can present a fresh and innovative perspective of the subject based on original thought, calculation, visualization and insight and can sift existing ideas, facts, postulations and theories into an independent, modern pattern that does not rest on how past thinkers\scientists saw nature's laws and forces acting on matter and life to keep them in existence. He must have an independent view and understanding of modern scientific facts, theories, postulates and model-dependent realities with all their drawbacks, deficiencies and unanswered questions and set them into a model that provides a frame to explain the mysteries behind nature's laws. He must not be influenced by any scientific model-dependent realities in visualizing the new model. His search should not be influenced by current theories and model-dependent realities. Based on this independent and clear perception, he can calculate, interpret and apply the facts, theories and model-dependent realities of nature's laws to constitute new mathematically phrased electromagnetic theories for the origin of matter and life.

He should be prepared to look at a problem from many angles and in different perspectives. Einstein did not invent independent concepts of energy, mass or speed of light but he combined them in a unique way and made new discoveries. Similarly, a new Einstein will have to come up with new ways of calculating and visualizing problems and their solutions, provide new, supportive mechanisms and evidence as to how exactly matter originated and then accretion took place to compose our orbiting, rotating and ever expanding orbital universe.

There is also a strong need for an astronomer-Einstein who can present the electromagnetic processes responsible

for the origin of matter, apparently out of nothing, in a fresh, independent application of theoretical and practical understanding about the subject and who can visualize the electromagnetic charges and forces acting on matter in tandem to keep it together. This matter accumulates and develops into early and young solar system that supports the electromagnetic origin and evolution of life on earth. The present picture of solar system, as per modern science, does not support the processes that led to the origin and evolution of life on earth. The need is deeply felt for a physicist who can propose a new electromagnetic model that satisfactorily explains the origin, evolving and accumulation of matter into our orbiting universe which, in turn, may trigger the rhythmic, alternative pulse radiation-dependent electromagnetic forces to act in pairs on the bases in the DNA and explain the electromagnetic processes for the origin, evolving and working of life on the earth.

The early solar system was more dynamic than it is today. The early solar system appears to have reshaped itself through various interplanetary exchanges of matter to trigger and support the life originating processes on the earth in response to the rhythmic and alternative paired pulse radiation from distant paired pulsars. Life on earth is due to the combined electromagnetic effect of the whole universe through invisible, rhythmic and alternative paired pulse radiations from the distant paired radio pulsars. Like the cosmic consciousness, this radiation from distant paired radio pulsars and interplanetary activities equipped gave earth its life-originating, evolving, working and maintaining electromagnetic processes.

This book makes an attempt to incorporate the electromagnetic activities of the whole universe with the rhythmic alternative pulse radiations from distant space, which could be responsible for the origin, evolution, continuation and working of life and the exploration of a totally different path of evolution of life on earth that could, ultimately, reveal the mystery of life. Through a radical line of independent thought,

the author has worked with the available information to gain a theoretical and practical understanding of model-dependent realities and, applying & using observational evidence and knowledge, tried to evolve a hypothesis that would explain unanswered questions so as to provide a platform for the unification of all modern theories about the origin, evolving process, developing and working of the orbiting, spinning, ever-expanding and electromagnetically interacting and interconnected universe. He thus provides an entirely new conceptual understanding to enable the human mind to investigate the mysteries behind nature's laws using a totally fresh approach and electromagnetic understanding to establish a prosperous, happy, harmonious, intelligent and safe modern world.

The early universe, 13,000 million years ago, was empty of all matter, but there was an abundance of high electromagnetic energy in linear motion and plenty of space. We call this energy the Great Energy. There were no electromagnetic forces and charges of nature in the universe at this stage, because the charges & forces of nature are created through the merging of a wave's energy into a single point that provides electromagnetic charges & forces and an huge electromagnetic space for matter-originating processes. These waves of energy, or Great Energy, traveled freely in all directions in space in huge masses. This concept is the starting point of this book and, based on this, a new picture of the material universe and its natural charges & forces has been presented. On the canvas of the resulting orbital universe, a new picture of the electromagnetic origin, accumulation, phasing of matter into an electromagnetic ring of radiation to form an orbiting and spinning space object which gradually evolved through accretion of matter into our solar system, our planet and life.

The book provides a platform for physicists, physicians, materials engineers', biologists, astronomers and technical and scientific people to re-examine the process of the origin and evolution of matter and life on earth and the evolu-

tion of the solar system which, presently, is not completely understood. This book also provides a new definition of life that enables medical science to treat incurable diseases related to the malfunctioning of DNA, like cancer, diabetes and AIDS. The investigations of this approach will throw open new horizons for modern science, enabling it to advocate a perfect and unified theory about the electromagnetic origin, developing and working of life. A lot more still remains to be explored. A concerted effort by technologists and scientists from different disciplines is needed to progress this line of understanding.

The proposed hypothesis needs to be examined and confirmed by tangible evidence before being put forth for universal acceptance. The author humbly urges all intellectual readers, experts on the subject and scientific and technical research institutions to contribute to these significant concepts, criticizing, amending and contributing new ideas to improve it, pointing out contradiction in conceptual understanding and, possibly, suggesting a new framework to make viable the concepts, thus laying a foundation stone for the building a universal theory about the origin of matter, mass, space objects and finally life on the earth to make our nation world teachers again..

This conceptualization must be amenable to experimental confirmation by intellectual contributions and direction of experts on the subjects from different scientific institutes. The scientific community must present a revised hypothesis with the help of scientific experts in the Earth Sciences to ensure the experimental and technical feasibility that allows Modern Science at large to serve humanity.

Dr. S.M. Sharma
Additional Principal,
S.M.S.Medical College, Jaipur

THOUGHT PROVOKING



It is still a mystery as to how Universe evolution took place. Recently BIG BANG theory has put forth to explain this, but the question remains unanswered. Asamanya Vishwa, has tried faithfully to explain this evolution. This book has tried to explain this in a scientific manner and to provoke & stimulate its idea and thought regarding various aspects of ancient history of human beings, animals and universe as a whole. I congratulate author & wish him success.

– **Dr. S.K. Sharma.**

Senior Consultant Physician and Cardiologist.
Formerly: Medical Superintendent,
SMS Medical College & Hospital Jaipur. Ph.0141-620474

A Good Attempt



The book Asamanya vishwa is a good attempt to take the readers to have their brains stimulated. The book would prove a new hypothesis to think over and go deeply in to the subject for those learned persons who have interest and knowledge towards the Almighty (God). The very fact that this is 13th edition shows that thoughts are well presented.

– **Dr. Anish Maru**

Senior Consultant, Medical and Pediatric Oncology.

The experts on the subject could sit together



“**Asamanya Vishwa**” is an exciting book. The imaginative script of the “**Asamanya Vishva**” may add some more dimension to the understanding the process of evolution.

The experts on the subject could sit together and form new hypothesis.

– **Late. Dr. Ashok Panagariya**

M.D.(Med.) D.M.(Neurol.), Ex.V.C Rajasthan Health Univercity, Jaipur,
Member Rajasthan State Planning Commission

परिकल्पना के वैज्ञानिक आधार की परख जरूरी



असामान्य विश्व एक सराहनीय, साहसिक एवं मौलिक प्रयास है। हालांकि लेखक द्वारा प्रस्तुत परिकल्पना को वैज्ञानिक आधार पर परखा जाना अभी बाकी है। लेखक के विचारों से पूर्ण सहमति न सही, आंशिक सहमति तो इस समय भी है, लेकिन हर हाल में यह कार्य सराहनीय है। इस परिकल्पना पर व्यापक विचार विमर्श और बहस की आवश्यकता है और इस विचार विमर्श के नतीजे में कुछ नये तथा मौजूदा वैज्ञानिक मान्यताओं से अलग नतीजे आने की प्रबल संभावनाएं हैं। डार्विन के सिद्धान्त पर अब बहुत गंभीर प्रश्न उठने लगे हैं। इन्सान द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों की एक आयु होती है। लेखक से मेरा एक निवेदन यह भी है कि वे धार्मिक पुस्तकों विशेष रूप से कुरआन में विश्व की उत्पत्ति एवं मानव की उत्पत्ति के बारे में जो संकेत दिय गये हैं उन्हें भी अपनी कल्पना के साथ जोड़ कर देखें। मुझे इनमें कुछ समानताएं नजर आती हैं। व्यापक विचार विमर्श के बाद कुछ ज्यादा स्पष्ट रूप से नजर आयेगा और जैसे-जैसे वास्तविक ज्ञान का प्रकाश बढ़ता जायेगा, सत्य स्पष्ट होता चला जायेगा। मैं लेखक को बधाई देता हूँ कि उन्होंने इस विचार मन्थन को गति दी है।

शुभाकामनाओं के साथ

– डॉ. मोहम्मद सलीम इन्जीनियर

विभागाध्यक्ष इलेक्ट्रॉनिक्स एण्ड कम्प्युनिकेशन इन्जीनियरिंग विभाग, MNIT, जयपुर

Unique Informative Work



The book "Asamanya Vishwa" is a unique book. It is good effort in explaining the evolution of solar system and life on the earth. The need of extensive work to improve this hypothesis and scientific evidence is required in its support.

– **Dr. C.L. Nagpal,**

Director Indian Acupuncture Training & Research Institute Jaipur.

आश्चर्यजक एवं उपयोगी

‘ असामान्य विश्व’ एक सराहनीय एवं साहसिक प्रयास है। यह पुस्तक पृथ्वी एवं ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के सम्बन्ध में आश्चर्यजक एवं उपयोगी जानकारी प्रदान करती है तथा वैज्ञानिक मतों के पुनः परीक्षण हेतु प्रेरित करती है। इस साहसिक कार्य के लिए शुभाकामनाएं।

– **Dr.**

S.J. Singh

Project Incharge, AICRP on Chickpea ARS Durgapura, jaipur

An Interesting Reading



It was a pleasure to read the book "Asamanya Vishwa" 13th edition. It makes an interesting reading and focuses on many queries which are related to human existence and existence of globe. However the authenticity of the facts narrated in the text is based on hypothesis. Many issues related to this world are still unanswered. I am sure future editions will bring more authentic and scientific information on those subjects.

– **Dr. Shiv Gautam,**

Director Professor, Gautam Institute of Behavioral Sciences & Alternative Medicines, Jaipur.

A Talented & Innovative Book



The book 'Asamanya Vishwa' is a good publication, from which readers are expected to understand the logical terms what analytic universe human life tools are available & how these can be related to universal activities of the universe in general system. These are helpful in improving science & technology. The writer is making contribution of such universal details for innovative efforts. I congratulate the author for an effort to correlate and substantiate the facts scientifically.

In the present competitive world this book is intended to provide a competitive edge to all scientists & general readers are expected to find the book of great utility.

– **Dr. S.K. Bhurat**, M.S.(ENT),
Med. Supdt., Amar Jain Hospital, Chaura Rasta, Jaipur.

A New Hypothesis



Learned author of the book "Asamanya vishwa" has covered a unique subject to think over the various aspects taken up in the book and common persons can not understand the objectives mentioned in this book. Hence this book would prove a new hypothesis to think over and go deeply in to the subject for those learned persons who have interest and knowledge towards the Almighty (God) and "Shrishti Rachna".

I wish all the best to proceed on and make it so simple so that general masses may understand and grasp the views. I wish great success of the book.

– **Dr. Anjani Kumar Sharma**,
Professor, Department of Neurology SMS medical college & Hospital,
Jaipur. Ph. 0141-261863

A Great Effort



Creation of solar system remains a mystery to mankind. The Asamanya vishwa has proposed a new hypothesis which requires to be validated scientifically. Nevertheless, it is a great effort on the part of author.

– **Dr. Kamlesh Khilnani,**

Professor Ophthalmology, SMS Hospital Jaipur.

A Highly illuminative Book



It gives me great pleasure to write my views regarding highly illuminative book 'Asamanya Vishwa'. It is informative for persons of all ages. The thought provoking scientific knowledge is quite useful. I congratulate author and wish him success in his future endeavor. – **Professor J.L. Sehgal**
Chairman, The institution of Engineers(India) Rajasthan State Centre, Jaipur

A Good Effort

The "Asamanya Vishwa" 13th combined edition 2/2012 is good effort to throw some light on the various aspects of the creations of universe and solar system along with origin and evolutions of life in a simple way. This book provides a consolidated knowledge which can be help to learn some basics in this field. I appreciate that this book is bilingual which can interest all. Some recent data and finding can also be added so that this book can help the students preparing for various competitive exams. I congratulate the author for this book for his efforts.

– **Prof. Dr. Amla Batra**

Emeritus Scientist, Department of Botany U.O.R. Jaipur.

Wonderful Wisdom & Hypothesis

Asamanya Vishwa 13th edition is a wonderful effort made by the author especially when he is an Arts Graduate working in AG office and has no scientific back ground. His wisdom and hypothecations give new thoughts on the subject. Further working and research on the subject may yield highly useful results on the subject.

I congratulate the author for presenting the new hypothecations and wish him all success.

– **Dr. V.N. Mathur, Administrator,**
Linear Accelerator Center, S.M.S. Hospital Jaipur.

असामान्य सोच



‘ असामान्य विश्व’ में जीव की उत्पत्ति से लेकर प्रकृति की नवीन अवधारणा स्थापित करने का जुनून सराहनीय है। पुस्तक में नवीन वैज्ञानिक सोच से महत्वपूर्ण विषयों पर अनुसंधान की जिज्ञासाएं बलवती होती हैं।

– **राजेन्द्र राना**
प्रदेशाध्यक्ष, राज. राज्य नर्सिंग एसोसियेशन

Original Piece of Work

I read with deep interest and curiosity the hypothesis proposed in the book “Asamanya Vishwa”. I must first congratulate author for this original piece of work and call upon the scientific community to validate the hypothesis. I feel that this work may help explain the mysteries of our existence. My best wishes to the author for all future endeavors.

– **Dr. Mukul Mathur,**
Professor, Pharmacy, SMS medical college Jaipur.

A New Concept of Universe

I have gone through the Asamanya vishwa that put forward new concept of universe along with its origin. His scientific approach in explaining the bio-chemistry and genetic part of plant, animal and man is highly appreciated. I acknowledge for his original proposal for the modern science. –

Dr. & Pro.Kalpna Sankhala,
Department of Pathology, SMS medical college Jaipur.

A New Dimension



I am glad to know it that “Asamanya Vishwa” has got new dimensions regarding flow of energy generated from the earth & the solar system to felicitate the betterment of the health of the human being. It seems to me that this is a different kind of book which would be liked by general population of our country and I wish the team of editorial board of this book all the best and bright future.

– **Pro. Dr. Man Prakash Sharma.**

Unit Head Dept. of ENT, SMS Medical College and Hospital Jaipur.

A Commendable Effort



The “Asamanya Vishwa” is commendable effort to find a new concept of origin & evolution of matter & life.

I congratulate and express my good wishes for future.

– **Pro. Dr. G. Devpura**

Unit Head, Medicine, SMS Medical college & Hospital, Jaipur

An Innovative and New Approach



I appreciate totally innovative & new approach towards development, formation & existence of this world compiled in a book Format "Asamanya Vishwa" 13th edition.

Let me share frankly that there are many repeaters & followers in this world but people like you, the original thinkers & leaders can really improve the understanding of evolutions of mankind & principle of energy flow and its dynamics & other untouched aspects. I whole heartedly admire this sincere effort and wish perceptions of the subject will keep on increasing with time, this benefiting the human race & entire world.

My greetings & best wishes to Asamanya vishwa.

– **Dr. Ram Babu Sharma,**

Associate Professor, Pediatrics, SMS Medical College & SPMCHI , Jaipur

An Interesting Hypothesis

This book "Asamanya Vishwa" gives an insight of the evolution of solar system in a unique and interesting way. There was always a curiosity in the mind that how did life originate and what were the stages of evolution of life. After reading this book, I was able to understand the history of birth from simple to complex living beings which includes plants, animal and finally human. It was exciting to note that the man can extend his life by controlling the growing bio electromagnetism.

I appreciate the hard work of the author in compiling this book and congratulate him for this book which is full of knowledge and interesting hypothesis with supporting evidence.

With best wishes.

– **Dr. Monica Jain,** Associate Professor
Pharmacology & coordinator MEU, SMS Medical College Jaipur.